निम्न वैकल्पिक पत्रों में से कोई दो पत्र छात्र पढेंगे

विद्यालङ्कार [B.A.(Hons.) Sanskrit]
विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृत विषयक विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Elective Course for Sanskrit
सत्र- पञ्चम Semester –V

विषय सम्बद्ध वैकल्पिक पत्र (DSE-Paper)	**तर्क एवं वितर्क की भारतीय पद्धति**	**पूर्णाङ्क -100**
	Indian System of Logic and Debate	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code: HSA -E511		**आन्तरिक परीक्षा-30**
		सकल-अर्जिताधिभार 06

पाठ्यक्रम (Course)
खण्ड- क (Section- A) तर्कविज्ञान के तत्त्व
खण्ड- ख (Section-B) न्यायबद्ध तर्क
खण्ड- ग (Section-C) वाद-विवाद के सिद्धान्त

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

यह पाठ्यक्रम छात्रों को भारतीय तर्क वितर्क के सिद्धान्तों और उसके सम प्रयोग से परिचित कराता है। इसका उद्देश्य केवल दार्शनिक विचार विमर्श का परिचय देना ही नहीं है, अपितु ज्ञान के प्रत्येक पहलू को समझाना है। यह पाठ्यक्रम केवल छात्रों की दैशिक युक्तियों को ही आगे नहीं लाता, अपितु यह उनकी बौद्धिक क्षमता को भी विकसित करता है, ताकि वे अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में संसार को और अधिक गम्भीरता से समझ सकें।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों में तर्कणा शक्ति का विकास होगा। सत्य असत्य को समझने में सहायता मिलेगी।
2. कोई छात्र **LLB / LLM** करना चाहे तो इस पाठ्यक्रम से विशेष लाभ प्राप्त कर सकता है।
3. तर्क की तुला पर तौल कर लौकिक व्यवहार को करने में समर्थ होगा।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)
तर्कविज्ञान के तत्त्व

घटक-क (Unit-1) अन्वेषण-विज्ञान (आन्वीक्षिकी),एवं इसका महत्त्व, तर्क एवं वितर्क की कला में आन्वीक्षिकी का विकास, तर्क और वितर्क की परिषद् तथा इसके प्रकार, वाद विवाद (वादी-परिवादी) , न्यायाधीश (मध्यस्थ/ प्राश्निक)

घटक-ख (Unit-2) तर्क एवं वितर्क की पद्धति (सम्भाषाविधि/वादविधि) तथा उसकी उपयोगिता, वाद विवाद के प्रकार- सौहार्दपूर्ण वादविवाद (अनुलोम सम्भाषा) तथा विद्वेषपूर्ण वादविवाद (विग्रह सम्भाषा) , औचित्यपूर्ण वादविवाद (वादोपाय) तथा वादविवाद की सीमाऐं (वादमर्यादा) ।

नोट : वाद विवाद की परिभाषा और सिद्धान्त न्यायसूत्र, भीमाचार्य झल्कीकार द्वारा लिखित न्यायकोश तथा ए0 सी0 विद्याभूषण द्वारा रचित A History Of Indian Logic के Chapter III के Section I के आधार पर ही होंगे । केवल प्रतिदिन मानव व्यवहार में आने वाले स्पष्टीकरण एवं उदाहरण ही लिए जायेंगे और दार्शनिक उदाहरणों का परित्याग किया जाना आवश्यक है ।

खण्ड –ख (Section–B)

न्यायबद्ध तर्क

घटक-क (Unit-1) अनुमान प्रमाण के लक्षण तथा इसमें प्रयुक्त शब्दावली साध्य, हेतु, पक्ष, सपक्ष, विपक्ष,व्याप्ति और इसके प्रकार, आगमनात्मक विधि से व्याप्ति को एवं तर्क के पञ्चावयव (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय , निगमन) उपाधि और तर्क। तर्क के स्वरूप एवं प्रकार

नोट- तर्क संग्रह के आधार पर , S.C. chatteergee nyaay theory of knowledge chapter 11-14

खण्ड–ग (Section–C)

वाद-विवाद के सिद्धान्त

घटक (Unit) 1–दृष्टान्त, सिद्धान्त, निर्णय, कथन और उसके प्रकार, वाद, जल्प, वितण्डा इसका ज्ञान

घटक (Unit) 2- छल एवं उसके प्रकार, जाति और इसके महत्त्वपूर्ण प्रकार- साधर्म्यसम, वैधर्म्यसम, उत्कर्षसम और अपकर्षसम, निग्रहस्थान और इसके प्रकार- प्रतिज्ञाहानि, प्रतिज्ञान्तर, प्रतिज्ञाविरोध, प्रतिज्ञासंन्यास, मतानुज्ञा।

उक्त प्रकरण न्यासूत्र वादविवाद की परिभाषा और सिद्धान्त न्यायसूत्र, भीमाचार्य झल्कीकार द्वारा लिखित न्यायकोश तथा ए0 सी0 विद्याभूषण द्वारा रचित A History Of Indian Logic के Chapter II के Section I के आधार पर ही होंगे। केवल प्रतिदिन मानव व्यवहार में आने वाले स्पष्टीकरण एवं उदाहरण ही लिए जायेंगे और दार्शनिक उदाहरणों का परित्याग किया जाना आवश्यक है।

अनुशंसित ग्रन्थ (Suggested Books/Readings)

1. Vidyabhushan,SatishChandra,*AHistoryofIndianLogic*,MLBD,Delhi,1962. (ChapterIIIofSectionI&ChapterIIofSectionIIonly)
2. Potter, karlH., Encyclopedia of Indian Philosophies, Vol. II, Motilal Banarsidass, Delhi,1977.
3. Jhalkikar,Bhimacharya,*Nyāyakośaḥ*,BhandarkarOrientalResearchInstitute, Poona, 1997 (reprint of fourthedition)
4. Athalye & Bodas, *Tarkasaṅgraha*, Mumbai, 1920. (only introduction & exposition of*anumāna*)
5. SHSAtri ,Kuppuswami, *A Primer of Indian Logic*, Madras, 1951 (only introduction & exposition of*anumāna*) .
6. TarkasaṁgrahaofAnnaṁbhaṭṭa(withDipika) ,(Ed.&Tr.inHindi) ,Kanshiram & Sandhya Rathore, MLBD, Delhi2007.
7. Bagchi,S.S.–*InductiveLogic:ACriticalStudyofTarka&ItsRoleinIndian Logic*, Darbhanga,1951.
8. Chatterjee, S. C. & D. M. Datta - *Introduction to Indian Philosophy*, Calcutta University, Calcutta, 1968 (Hindi Translationalso)
9. Chatterjee,S.C.–*TheNyāyaTheoryofKnowledge*,Calcutta,1968.
10. Hiriyanna, M. - *Outline of Indian Philosophy*, London, 1956 (also Hindi Translation) .
11. Jha, Harimohan – Bhāratīya Darśana Paricaya, Vol. I (Nyāya Darśana) , Darbhanga.
12. Matilal,B.K. –*TheCharacterofLogicinIndia*,Oxford,1998.
13. Radhakrishnan,S.-*IndianPhilosophy*,OxfordUniversityPress,Delhi,1990